पाठ 2: जॉर्ज पंचम की नाक

📖 पाठ का सार (Summary)

कमलेश्वर द्वारा रचित यह पाठ एक करारा व्यंग्य है। जब इंग्लैंड की रानी एलिज़ाबेथ द्वितीय भारत दौरे पर आने वाली थीं, तो दिल्ली में अचानक 'जॉर्ज पंचम' की लाट (मूर्ति) की टूटी हुई नाक लगाने की चिंता होने लगी। वह जॉर्ज पंचम जिसने भारत पर अत्याचार किए थे, उसकी नाक बचाने के लिए भारतीय अधिकारी परेशान हो गए। मूर्तिकार ने पूरे देश के पहाड़ों और महापुरुषों की मूर्तियों की नाक जाँची, पर सबकी नाक जॉर्ज पंचम की नाक से 'बड़ी' निकली (यानी उनका सम्मान अधिक था)। अंततः एक ज़िंदा भारतीय की नाक काटकर मूर्ति पर लगा दी गई। यह कहानी आज़ादी के बाद भी हमारी 'गुलाम मानसिकता' और दिखावे की राजनीति पर चोट करती है।

प्रश्न 1: सरकारी तंत्र में जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर जो चिंता या बदहवासी दिखाई देती है, वह उनकी किस मानसिकता को दर्शाती है?

सरकारी तंत्र में जॉर्ज पंचम की नाक लगाने की चिंता उनकी **गुलाम मानसिकता (Slave mentality)** को दर्शाती है। यद्यपि भारत स्वतंत्र हो चुका था, फिर भी अधिकारी अंग्रेज़ों (जिन्होंने हम पर शासन और अत्याचार किया था) को खुश करने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार थे। यह उनकी हीन-भावना, दिखावे की प्रवृत्ति और आत्मसम्मान की कमी का प्रतीक है कि वे अपने देश के सम्मान की कीमत पर एक विदेशी शासक की 'नाक' बचाने में लगे थे।

प्रश्न 2: 'नाक' मान-सम्मान व प्रतिष्ठा का द्योतक है। यह बात पूरी व्यंग्य रचना में किस तरह उभरकर आई है? लिखिए।

हिंदी मुहावरों में 'नाक' का अर्थ इज़्ज़त या प्रतिष्ठा होता है। इस पूरी रचना में 'नाक' शब्द का प्रयोग व्यंग्यात्मक रूप में हुआ है:

1. जॉर्ज पंचम की कटी हुई नाक यह दर्शाती है कि आज़ाद भारत में विदेशी शासकों का कोई सम्मान नहीं बचा है।

2. भारतीय महापुरुषों और शहीद बच्चों की मूर्तियों की 'नाक' जॉर्ज पंचम की नाक से 'बड़ी' (लंबी) बताई गई है। इसका अर्थ है कि हमारे देश के महापुरुषों का सम्मान जॉर्ज पंचम से कहीं अधिक बड़ा है।

3. मूर्ति पर 'ज़िंदा नाक' लगाना यह दर्शाता है कि झूठे सम्मान और दिखावे के लिए सरकारी तंत्र ने पूरे देशवासियों की इज़्ज़त (नाक) दाँव पर लगा दी (या कटवा दी)।

प्रश्न 3: अख़बारों ने ज़िंदा नाक लगने की खबर को किस तरह से प्रस्तुत किया?

अख़बारों ने ज़िंदा नाक लगने की खबर को बहुत ही चालाकी से और प्रतीकात्मक ढंग से छापा। उन्होंने सच्चाई को छिपाते हुए केवल इतना लिखा कि "नाक का मसला हल हो गया है और राजपथ पर इंडिया गेट के पास वाली जॉर्ज पंचम की लाट के नाक लग गई है।" अख़बारों ने यह स्पष्ट नहीं किया कि वह नाक पत्थर की नहीं बल्कि किसी ज़िंदा इंसान की है। इसके अलावा, उस दिन अख़बारों में किसी उद्घाटन, सभा या जश्न की कोई खबर नहीं छपी; पूरा अख़बार खाली था, जो उनकी मौन असहमति (शर्मिंदगी) का प्रतीक था।

Schorbit